जूनोटिक बीमारियों पर सयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट

प्रीलिम्स के लिये:

जूनोटिक रोग, COVID-19, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम

मेन्स के लिये:

जूनोटिक रोगों के कारण एवं इन्हें रोकने हेतु उपाय

चर्चा में क्यों?

हाल ही में ‘संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम’ (United Nations Environment Programme- UNEP) तथा ‘अंतर्राष्ट्रीय पशुधन अनुसंधान संस्थान’ (International Livestock Research Institute- ILRI) द्वारा COVID-19 महामारी के संदर्भ में ‘प्रिवेंटिंग द नेक्स्ट पैंडेमिक: जूनोटिक डिज़ीज़ एंड हाउ टू ब्रेक द चेन ऑफ ट्रांसमिशन’ (Preventing the Next Pandemic: Zoonotic diseases and how to break the chain of transmission) नामक रिपोर्ट प्रकाशित की गई है।

प्रमुख बिंदु:

- इस रिपोर्ट में मनुष्यों में होने वाली जूनोटिक बीमारियों (**Zoonotic Diseases**) की प्रकृति एवं प्रभाव पर चर्चा की गई है।
- इस रिपोर्ट का प्रकाशन 6 जुलाई को ‘विश्व जूनोसिस दिवस’ (World Zoonoses Day) के अवसर पर किया गया है।
    - 6 जुलाई, 1885 को फ्रांसीसी जीवविज्ञानी लुई पाश्चर द्वारा सफलतापूर्वक जूनोटिक बीमारी रेबीज़ के खिलाफ पहला टीका विकसित किया था।
- प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, मनुष्यों में 60% ज्ञात जूनॉटिक रोग हैं तथा 70% जूनोटिक रोग ऐसे है जो अभी ज्ञात नहीं हैं।
- विश्व में हर वर्ष निम्न- मध्यम आय वाले देशों में 10 लाख लोग जूनोटिक रोगों के कारण मर जाते हैं।
- पिछले दो दशकों में, जूनोटिक रोगों के कारण COVID-19 महामारी की लागत को शामिल न करते हुए) $ 100 बिलियन से अधिक का आर्थिक नुकसान हुआ है जिसके अगले कुछ वर्षों में $ 9 ट्रिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है।
- रिपोर्ट के अनुसार, अगर पशुजनित बीमारियों की रोकथाम के प्रयास नहीं किये गए तो COVID-19 जैसी अन्य महामारियों का आगे भी सामना करना पड़ सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय पशुधन अनुसंधान संस्थान (ILRI):

- ILRI एक अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान है।
- इसकी स्थापना वर्ष 1994 में की गई।
- यह नैरोबी, केन्या में स्थित है।
- यह विश्व में खाद्य सुरक्षा और गरीबी उन्मूलन में पशुधन की भूमिका के संदर्भ में विश्व स्तर पर भागीदारों के साथ मिलकर कार्य करता है।

जूनोसिस/जूनोटिक रोग:

- ऐसे रोग जो पशुओं के माध्यम से मनुष्यों में फैलते है उन्हें जूनोसिस या जूनोटिक रोग कहा जाता है।
- जूनोटिक संक्रमण प्रकृति या मनुष्यों में जानवरों के अलावा बैक्टीरिया,वायरस या परजीवी के माध्यम से फैलता है।
- एचआईवी-एड्स, इबोला, मलेरिया, रेबीज़ तथा वर्तमान कोरोनावायरस रोग (COVID-19) जूनोटिक संक्रमण के कारण फैलने वाले रोग हैं।

जूनोटकि संक्रमण के कारक:

- रपिोर्ट में जूनॉटकि रोगों में वृद्धकि लयि सात कारकों को चन्हिति कयिा गया है जो इस प्रकार हैं-
    - पशु प्रोटीन की बढ़ती मांग
    - गहन और अस्थरि खेती में वृद्धि
    - वन्यजीवों का बढ़ता उपयोग और शोषण
    - प्राकृतकि संसाधनों का नरिंतर उपयोग
    - यात्रा और परविहन
    - खाद्य आपूर्तश्रिृंखलाओं में बदलाव
    - जलवायु परविर्तन संकट।

जूनोटकि संक्रमण को रोकने के उपाय:

- रपिोर्ट के अनुसार 'एक स्वास्थ्य पहल' (One Health Initiative) एक अनुकूलतम वधिहि जसिके माध्यम से महामारी से नपिटने के लयि मानव स्वास्थ्य, पशु एवं पर्यावरण पर एक साथ ध्यान दयिा जाता है।
- इस रपिोर्ट में 10 ऐसे तरीकों के बारे में बताया गया है जो भवषि्य में जूनोटकि संक्रमण को रोकने में सहायक हो सकते हैं जो इस प्रकार हैं-
    - 'एक स्वास्थ्य पहल' पर बहुवषियक/अंतर्वषियक (Interdisciplinary) तरीकों से नविेश पर ज़ोर देना।
    - जूनोटकि संक्रमण/पशुजनति बीमारयिों पर वैज्ञानकि खोज को बढावा देना।
    - पशुजनति बीमारयिों के प्रतजिागरूकता बढ़ाने पर बल।
    - बीमारयिों के संदर्भ में जवाबी कार्रवाई के लागत-मुनाफा वशि्लेषण को बेहतर बनाना और समाज पर बीमारयिों के फैलाव का वशि्लेषण करना।
    - पशुजनति बीमारयिों की नगिरानी और नयिामक तरीकों को मज़बूत बनाना।
    - भूमपि्रबंधन की टकिाऊशीलता को प्रोत्साहन देना तथा खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने के लयिे वैकल्पकि उपायों को वकिसति करना ताकआिवास स्थलों एवं जैववविधिता का संरक्षण कयिा जा सके।
    - जैव सुरक्षा एवं नयिंत्रण को बेहतर बनाना, पशुपालन में बीमारयिों के होने के कारणों को पहचानना तथा उचति नयिंत्रण उपायों को बढ़ावा देना।
    - कृषअिौर वन्यजीव के सह अस्तत्वि को बढ़ावा देने के लयि भूदृश्य (Landscape) की टकिाऊशीलता को सहारा देना।
    - सभी देशों में स्वास्थ्य क्षेत्र में हसि्सेदारों की क्षमताओं को मज़बूत बनाना।
    - अन्य क्षेत्रों में भूम-िउपयोग एवं सतत् वकिास योजना, कार्यान्वयन तथा नगिरानी के लयि एक स्वास्थ्य दृष्टकिोण (One Health approach) का संचालन करना।

अफ्रीकी देशों की भूमकिा:

- रपिोर्ट के अनुसार, हाल ही में अफ्रीकी महाद्वीप के अधकिांश देश इबोला तथा अन्य पशु-जनति महामारयिों से जूझ रहे हैं।
- अफ्रीकी महाद्वीप में बड़े पैमाने पर दुनयिा के वर्षावनों के साथ-साथ दुनयिा में सबसे तेज़ गतसि बढ़ रही जनसंख्या भी वद्यिमान है जसिके चलते पशुओं, वन्यजीवन एवं मनुष्यों में संपर्क के कारण संक्रमण के मामले बढ़े हैं।
- इन सबके बावजूद अफ्रीकी देश इबोला और अन्य उभरती बीमारयिों से नपिटने के रास्ते भी सुझा रहे हैं।
- रपिोर्ट के अनुसार, बीमारयिों पर नयिंत्रण के लयि अफ्रीकी देश नयिम आधारति तरीकों के बजाय जोखमि आधारति तरीके अपना रहे हैं जो उन क्षेत्रों में अधकि कारगर है जहाँ संसाधनों की कमी है।
- इस समस्या के समाधन के तौर पर अफ्रीकी देशों द्वारा 'एक स्वास्थ्य पहल' (One Health Initiative) को अपनाया जा रहा है जनिमें मानव स्वास्थ्य , पशु व पर्यावरण तीनों पर ध्यान दयिा जाता है।

नष्किर्ष:

अगर वन्यजीवों के दोहन तथा पारस्थितिकिी तंत्र में समन्वय नहीं कयिा गया तो आने वाले वर्षों में पशुओं से मनुष्यों को होने वाली बीमारयिाँ इसी प्रकार लगातार सामने आती रहेंगी। वैश्वकि महामारयिाँ मानव जीवन एवं एवं अर्थव्यवस्था दोनों को नष्ट कर रही हैं जैसा कहिमने पछिले कुछ महीनों से COVID-19 महामारी के के संदर्भ में देख रहे हैं। इनका सबसे ज़्यादा असर नर्धिन एवं नर्बिल समुदायों पर होता हैं अतः हमें भवषि्य में महामारयिों को रोकने के लयि अपने प्राकृतकि पर्यावरण की रक्षा के लयि वचिार करने की और अधकि आवश्यकता है।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/united-nations-report-on-zoonotic-diseases